सहायक वाचन

III

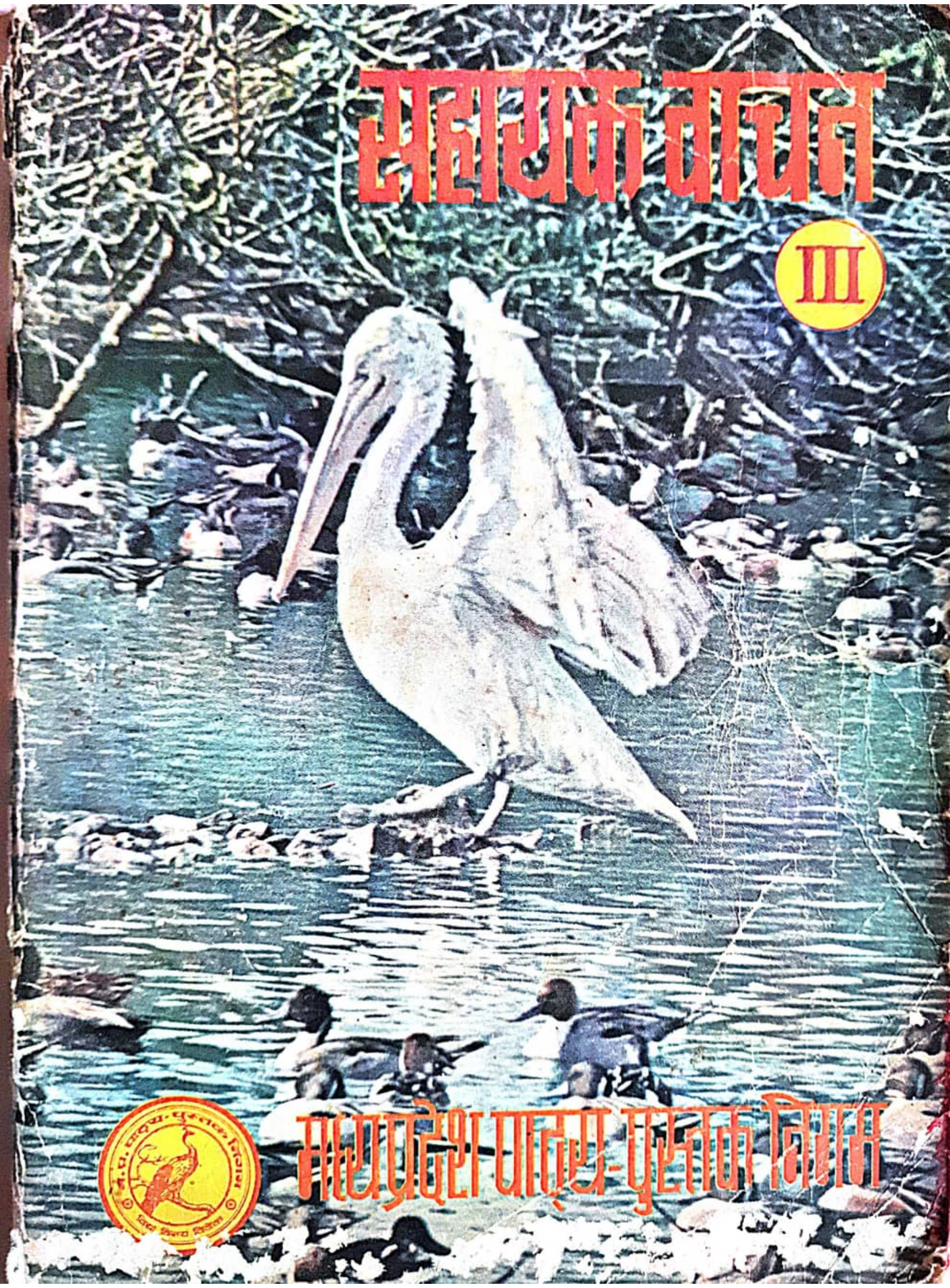

मध्यप्रदेश पाठ्य-पुस्तक निगम

सहायक वाचन

कक्षा ३ के लिए

लेखक-मंडल

श्री आर० एम० सिंहल

डा० श्रीकृष्णचंद्र तिवारी 'राष्ट्रबन्धु'

सम्पादक-मंडल

डा० पी० डी० भटनागर

डा० विनय मोहन शर्मा

विशेषज्ञ समिति

डा० टी० बी० नायक — डा० चन्द्रप्रकाश वर्मा

डा० कृष्ण चन्द्र वर्मा — डा० रमेश वाजपेयी

श्री बी० बो० खरे — श्री सी० एल० मिश्रा

मध्य प्रदेश पाठ्य-पुस्तक निगम, भोपाल

१९७४ में मुद्रित

मूल्य : रु० १·००

विषय-सूची

अध्याय १

हमारे वन्य एवं पालतू पशु

लेखक : श्री राम मोहन सिंहल

पृष्ठ

पाठ १—पशु परिचय १

पाठ २—हिंसक पशु ३

पाठ ३—शाकाहारी पशु ९

पाठ ४—साँपों का संसार १८

पाठ ५—कीड़े-मकोड़े २०

पाठ ६—पशु हमारे मित्र २१

पाठ ७—पशु संरक्षण २४

अध्याय २

बाल कहानियाँ

संकलन कर्त्ता : डा० श्रीकृष्णचन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु'

जातक कथाएँ

१. साधुता का प्रभाव—श्री व्यथित हृदय २६

२. महाकपि जातक—श्री अशोक मिश्र ३०

३. संगति का फल—श्री आनन्द कुमार ३५

४. खरगोश जो बहुत सोचता था—श्रीमती मोहनी राव ... ३८

पृष्ठ

लोक कथाएँ

१. परिवार की रीति—डा० श्रीधर मिश्र ४२

२. सबसे बड़ा गुण—श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ... ४६

३. सिंहासन बत्तीसी—संकलित ४८

बाल कहानियाँ

१. एकता बनी रहे—श्री कैलाश प्रसाद राव 'कुँवर' ... ५७

२. नया मोड़—श्री यशपाल जैन ५९

३. गाय की परीक्षा—डा० प्रभाकर माचवे ६४

४. कामचोरी की सजा—सुश्री लक्ष्मी वरसैया ६८

५. शाप का फल—श्री दामोदर अग्रवाल ७०

६. मेहनत की रोटी—श्री विश्ववंधु ७२

७. शेर का शिकार—श्री वृन्दावन लाल वर्मा ७७

हूँ । तुम्हें वरदान देता हूँ । तुम कामधेनु बनोगी और यह बछड़ा अमर होगा ।"

४. कामचोरी की सजा

एक बार पानी नहीं बरसा और चारों ओर अकाल छा गया । लोग भूख-प्यास से मरने लगे । जंगल के पशु-पक्षी और भी परेशान थे । छोटे-बड़े सभी पक्षियों की जान पर बन आई थी । अंत में निराश होकर सभी पक्षियों ने एक सभा की और समस्या का हल ढूँढ़ने की कोशिश की । खूब सोच-विचार करने के बाद सबने निश्चय किया कि नदी किनारे पर गड्ढा खोदा जाय, जिससे पीने के लिये पानी मिल सके । सारे पक्षी नदी की ओर उड़ चले । कुछ ने पैरों और चोंच से गड्ढा खोदा, कुछ ने रेत उठाकर फेंकी । आखिर में एक गड्ढा बना और पानी निकल आया । सबने अपनी-अपनी प्यास बुझाई । अब वे निश्चिंत होकर रहने लगे ।

पक्षियों में एक मुर्गा भी था । वह गड्ढा खोदने के काम में यह कहकर शामिल नहीं हुआ कि जरा-जरा से पक्षी गड्ढा खोदकर पानी नहीं निकाल सकते । इसीलिए मुर्गा अकेला रह गया था । अकेले रहने और भूख-प्यास के कारण मुर्गे की जान निकलने लगी थी । उसने अब अपने साथियों को ढूँढ़ना शुरू किया । बहुत खोजने के बाद उसको वह जगह मिली । पानी देखकर वह पीने के लिए दौड़ा । पक्षियों के सरदार ने उसे पानी पीने से मना कर दिया । उसने कहा कि तुमने कोई परिश्रम नहीं किया, इसलिए

तुम पानी नहीं पी सकते। साथ ही तुम्हें अपने साथियों पर भरोसा नहीं है। आलसी और कामचोर लोगों को यह पानी नहीं मिल सकता। मुर्गा गिड़गिड़ाने लगा। सरदार ने कहा, "तुम्हारा फैसला पंचायत में होगा।" शाम को पंचायत में मुर्गे ने प्रार्थना की। सभी सयाने पक्षियों ने पहले कामचोरी के लिए उसको खूब डाँटा। उन्होंने कहा, "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, पर मिल-जुलकर काम करने से सभी काम संभव हो जाते हैं।" मुर्गे ने अपना अपराध मान लिया और गलती के लिए क्षमा माँगी— "मुझे बड़े-से-बड़ा दंड दीजिए, पर मुझे पानी पी लेने दीजिए।" पक्षियों ने सोचा, इसको मारने से क्या लाभ। मारने से अच्छा है,

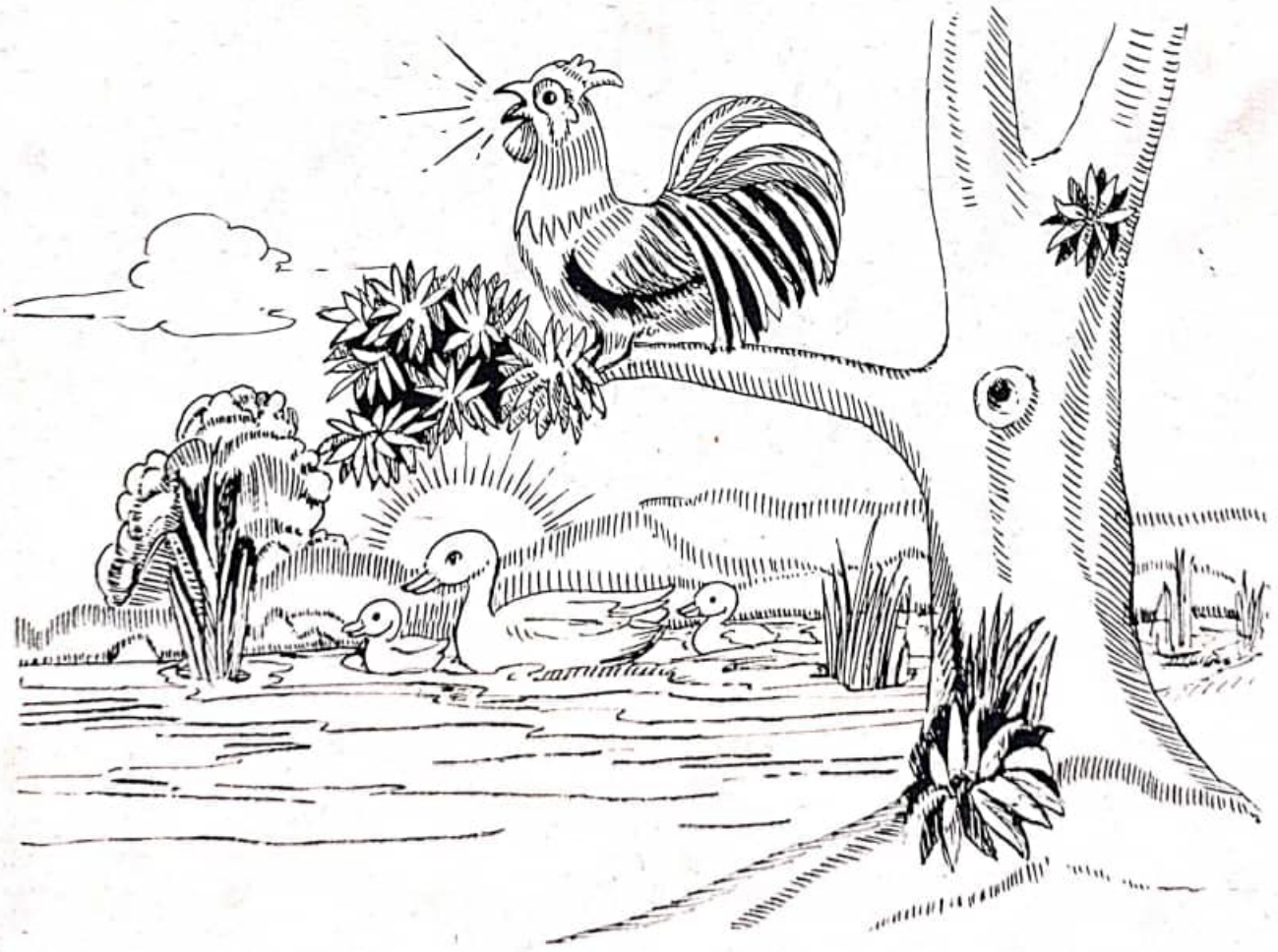

चित्र २१—दण्ड भुगतता हुआ मुर्गा

हमेशा के लिए इसको सुधारा जाय । उसे पानी दिया जाय, और कोई दंड भी दिया जाय ।

सभी पंचों ने मिलकर मुर्गे से कहा, "आज से तुम रोज सुबह सबसे पहले उठकर सबको जगाया करोगे, पानी की चौकीदारी करोगे ।" मुर्गे ने यह बात मान ली और तभी से रोज सुबह वह बाँग देता आ रहा है ।

५. शाप का फल

एक बार एक ऋषि तपस्या पर बैठे। कई सदियाँ बीत गईं, पर वे तपस्या पर बैठे ही रहे ।

इस बीच जाने कितने जंगल उगे और फिर सूखकर खाक हो गये, किन्तु वे तपस्या पर बैठे ही रहे। धीरे-धीरे उनका सारा शरीर मिट्टी में धँस गया और उनके चारों ओर झाड़-झंखाड़ उग गये । उनका जटाजूट भी गिर कर साफ हो गया। दूर से उनका गंजा सिर धरती को फोड़कर ऊपर निकलते हुए किसी बड़े फल-सा नजर आता था ।

एक दिन ऊपर से एक बड़ा-सा पक्षी गुजरा । उसे दूर से ऋषि का चमकता हुआ माथा नजर आया। उसने सोचा कि वह शायद कोई नया मीठा फल है, जो धरती तोड़कर ऊपर आ रहा है । यह सोचकर पक्षी ने उसे चखने के लालच से उस पर एक चोंच मारी। इससे ऋषि की तपस्या में बाधा पहुँची और उन्होंने